भूमिका

नाटक विधा समाज से जुड़ी हुई विधा है। जिसका हिंदी भाषा और पंजाबी भाषा दोनों में ही आधुनिक काल में आगमन हुआ। हिंदी और पंजाबी नाटकों पर अन्य भाषाओं के नाटकों बंगला, संस्कृत और अंग्रेजी आदि का प्रभाव भी पड़ा। आज हिंदी रंगमंच में नए-नए प्रयोग किए जा रहे हैं। हिंदी नाटकों की अपेक्षा पंजाबी नाट्य विधा अधिक विकसित नहीं हो पाई है। नाटक दृश्य-श्रव्य माध्यम होने के कारण सीधे-सीधे इसका संपर्क जनता से करना आसान होता है। लोग आज इतने व्यस्त हैं कि अपने परिवार के सदस्यों के लिए ही वक़्त निकाल पाना उनके लिए कठिन हो गया है। बाज़ारवाद और भूमंडलीकरण के प्रभाव के कारण लोग आज तकनीकी का प्रयोग करने लगे हैं। अपने भावों को व्यक्त करने के माध्यम में भी परिवर्तन कर लिया है। ऐसे में नाटक विधा को जनता तक पहुंचाना भी सरल नहीं रह गया है। रंगमंच का विकास तो साहित्य में हो ही रहा है पर रंगमंचीय कलाकार को आजीविका के लिए उतना वेतन नहीं मिल पाता, जितना उनको मिलना चाहिए। इस कारण से भी नाटक के प्रति लोगों का रुझान कम हो रहा है।

लघु शोध-प्रबंध का विषय *'गगन दमामा बाज्यो'* और *'छिपण तों पहलां'* नाटक का तुलनात्मक अध्ययन है। इस लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया गया हैं। पहला अध्याय- तुलनात्मक साहित्य का अर्थ, स्वरूप एवं विस्तार है। जिसके तीन उप-अध्याय हैं। इस अध्याय में तुलनात्मक साहित्य की उत्पत्ति, परिभाषा, स्वरूप, और आज के समय में इसका क्या महत्व हैं, इसके बारे में बताया गया है। दूसरा अध्याय- नाटककारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित है। इसमें नाटककारों के जीवन के बारे में विस्तार से लिखा गया है। तीसरा अध्याय- हिंदी और पंजाबी नाटक पहचान और परख है। इस अध्याय में हिंदी और पंजाबी नाटकों का प्रारंभ कब से होता हैं, कौन-कौन से नाटककारों ने अपनी भूमिका नाटक के क्षेत्र में अदा की है तथा आज के समय में कौन-कौन से नए नाटककार इस विधा में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं, इसका वर्णन किया गया है। चौथा अध्याय- 'गगन दमामा बाज्यो' और 'छिपण तों पहलां' नाटक का तुलनात्मक अध्ययन है। इस अध्याय के अंतर्गत दोनों नाटकों के नाट्य शिल्प और नाटक के भाव पक्ष की तुलना की गई है। जिसमें नाटक के तत्वों के साथ रंगमंच की दृष्टि को भी ध्यान में रखा गया है। दोनों ही नाटक रंगकर्मियों के द्वारा ही लिखे गए हैं। पीयूष मिश्रा और दविंदर दमन दोनों नाटककारों की विशेषता यह है कि दोनों ही रंगमंच से जुड़े रहे हैं। आज भी रंगकर्मी के रूप

में दोनों ही अपनी-अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। नाटक के क्षेत्र में तो सक्रिय हैं ही फिल्म जगत से भी दोनों नाटककारों का जुड़ाव है।

इस लघु शोध-प्रबंध में ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी तथा वैज्ञानिक आदि शोध की प्रविधियों का प्रयोग किया गया हैं। साहित्य में मेरी सबसे प्रिय विधा नाटक ही है। इसलिए भी मैंने नाटकों पर अपना विषय चुना। नाटक में अभिनय करना मुझे अच्छा लगता है। विद्यार्थी जीवन में कई नाटकों में अभिनय करती रही हूँ। इस विश्वविद्यालय में भी मुझे अपनी अभिनय की प्रतिभा को प्रदर्शित करने का समय-समय पर अवसर प्राप्त होता रहा है। साथ ही मैंने 'गगन दमामा बाज्यो' नाटक में लड़की का किरदार निभाया।

शोध कार्य करना कोई आसान काम नहीं हैं। जिस कारण से इस कार्य में किसी न किसी के सहयोग की आवश्यकता होती ही है। इस शोध का विषय हिंदी भाषा और पंजाबी भाषा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन हैं। जिसके लिए मैं सबसे पहले अपनी उन अध्यापिका का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक पंजाबी भाषा सिखाई थी। उस समय सीखी गई भाषा का आज बखूबी प्रयोग कर पाई हूँ।

अपने शोध निर्देशक डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग) की मैं अत्यंत कृतज्ञता पूर्वक उपकृत हूँ जिन्होंने अपने अध्ययन-अध्यायपन कार्यों में व्यस्त रहने पर भी जिस सहानुभूति और सौहार्द के साथ इस शोध कार्य का निर्देशन किया है, इसके लिए शाब्दिक कृतज्ञता केवल औपचारिकता मात्र होगी। अतः इस महत कार्य के लिए मैं उन्हें विशेष आभार प्रकट करती हूँ।

साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर एवं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह सहित विभाग के अन्य समस्त शिक्षकों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। डॉ. हरप्रीत कौर (असिस्टेंट प्रोफेसर, अनुवाद एवं निर्वचन विभाग) और जगतार सालम के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करना चाहूंगी। इन्होंने मेरे शोध विषय का चुनाव करने में मेरी सहायता की। साथ ही पंजाबी भाषा को समझने में आई कठिनाइयों को दूर करने में भी मेरी मदद की।

इसके साथ-साथ मैं अपनी माता पुष्पा शर्मा, पिता नत्थी लाल शर्मा तथा मेरी दोनों छोटी बहनों बरखा और कीर्ति एवं छोटे भाई मोहित का भी आभार व्यक्त करती हूँ। जो हमेशा से ही मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे हैं और घर से इतनी दूर शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा। मेरे शोध पूरा होने में मेरे परिवार का विशेष योगदान रहा हैं।

शोध विषय की समस्याओं से निपटने के लिए नाटककारों और नाटकों के विशेषज्ञों से साक्षात्कार लिया गया है। जिसके लिए पीयूष मिश्रा और दविंदर दमन की आभारी हूँ कि उन्होंने अपना बहुमूल्य समय दिया और जब भी जरूरत पड़ी उन्होंने फोन पर ही उसका समाधान किया।

विशेष रूप से मैं जुगुल किशोर के प्रति आभार व्यक्त करूंगी जिसने अपने कीमती समय में से समय निकाल कर जब भी मुझे जरूरत हुई हैं तब-तब मेरी मदद की है। साथ ही अंकिता रासुरी, सुनीता, अपर्णा, यदुवंश प्रणय, रोहित कुमार और जैनेन्द्र दोस्त आदि की आभारी हूँ जिन्होंने जैसे भी बन पड़ा मेरे शोध कार्य में मेरा सहयोग किया।

आखिर में इस शोध प्रबंध को पूरा करने में जिन भी मित्रों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग रहा है, मैं उन सब के प्रति भी बहुत आभारी हूँ।